Toppersnotes®
Unleash the topper in you

RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग – 2

भारत का प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास

SIERRA INNOVATIONS

RAS

भाग-2

भारत का प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास

S.No.	Chapter Name	Page No.

1.	सिन्धु घाटी सभ्यता
	• भौगोलिक विस्तार
	• हड़प्पा सभ्यता के चरण
	  ○ प्रारंभिक/पूर्व-हड़प्पा चरण (3500-2500 ईसा पूर्व)
	  ○ परिपक्व हड़प्पा चरण (2500-1800 ईसा पूर्व)
	  ○ उत्तर हड़प्पा चरण (1800-1500 ईसा पूर्व)
	• हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल
	• सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएँ
		1

2.	वैदिक काल(1500-600BC)
	• आर्यों की मूल पहचान
	• वैदिक साहित्य
	  ○ ब्राह्मण-ग्रन्थ
	  ○ आरण्यक
	  ○ उपनिषद
	  ○ वेदान्त
	  ○ वेदांग
	• प्रारंभिक वैदिक काल या ऋग्वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व - 1000 ईसा पूर्व)
	  ○ भौगोलिक पृष्ठभूमि
	  ○ राजनीतिक संरचना
	  ○ सामाजिक संरचना
	  ○ आर्थिक संरचना
	  ○ शिक्षा
	  ○ संस्कृति और धर्म
	• उत्तर वैदिक काल (1000 ईसा पूर्व - 600 ईसा पूर्व)
	  ○ भौगोलिक विस्तार
	  ○ राजनीतिक संरचना
	  ○ समाज
	  ○ महिलाओं की स्थिति
	  ○ शिक्षा
	  ○ भोजन और पोशाक
	  ○ आर्थिक संरचना
		9

	○ संस्कृति और धर्म ○ वैदिक काल में होने वाले सोलह संस्कार	
3.	संगम युग • संगम साहित्य का संग्रह • संगम युग के महत्वपूर्ण राज्य • प्रारंभिक पांड्या साम्राज्य ○ नेदुनचेलियन II ○ सामाजिक आर्थिक स्थिति ○ पांड्यों का पतन ○ उत्तर पांड्य ○ महत्वपूर्ण राजा ○ बाद के पांड्यों का पतन • चोल • चेर साम्राज्य • संगम युग के दौरान जीवन ○ आर्थिक जीवन ○ सामाजिक जीवन ○ पोशाक और आभूषण ○ राजनीति और प्रशासन ○ धार्मिक जीवन ○ कानून और न्याय • संगम साहित्य	**19**
4.	प्राचीन भारत में धर्म • हिन्दू धर्म ○ आस्तिक पंथ ○ लोक पंथ ○ दक्षिण में वैष्णव आंदोलन ○ शैववाद • प्राचीन भारत में दार्शनिक प्रवृत्तियाँ ○ वैदिक दर्शन • वेदांत आधारित अन्य दार्शनिक मत • अपरंपरागत दर्शन - चार्वाका दर्शन • वेदांत / उत्तर मीमांसा • अद्वैत • विशिष्टाद्वैत • द्वैत • द्वैताद्वैत • शुद्धाद्वैत	**26**

	• अचिंत्य भेदाभेद
	• पूर्णद्वैत या एकात्म अद्वैत
	• आधुनिक वेदांत
	• बौद्ध धर्म और जैन धर्म
	  ○ उनकी उत्पत्ति के पीछे के कारण
	• बौद्ध धर्म
	  ○ गौतम बुद्ध
	  ○ ब्रह्मविहार
	  ○ बौद्ध धर्म की शिक्षा
	  ○ बौद्ध संघ
	  ○ बौद्ध साहित्य
	  ○ गैर-विहित साहित्य
	  ○ बोधिसत्व
	  ○ बौद्ध धर्म के संप्रदाय
	  ○ अन्य स्कूल
	  ○ बौद्ध धर्म के प्रसार के कारण
	  ○ बौद्ध वास्तुकला
	  ○ बौद्ध धर्म के पतन के कारण
	• जैन धर्म
	  ○ वर्धमान महावीर - 24वें और अंतिम तीर्थंकर
	  ○ महावीर की शिक्षा
	  ○ जैन संघ
	  ○ जैन धर्म की शिक्षा
	  ○ जैन धर्म के संप्रदाय
	  ○ जैन साहित्य
	  ○ जैन परिषद
	  ○ जैन धर्म के पतन के कारण
	• अन्य नास्तिक संप्रदाय
	  ○ आजीविका
	  ○ नियतिवाद
	  ○ लोकायत	

5.	महाजनपद काल (600-300 BC)
	• प्रमुख महाजनपद और उनकी विशेषताएं
	  ○ अंग
	  ○ अश्मक
	  ○ अवन्ति
	  ○ चेदि
	  ○ गांधार
		47

	○ काशी ○ कम्बोज ○ कोशल ○ कुरु ○ मगध ○ मल्ल ○ मत्स्य ○ पांचाल ○ सुरसेन ○ वज्जि ○ वत्स (वंश) • मगध ○ भौगोलिक स्थिति ○ आर्थिक स्थितियां ○ मगध के उदय के कारण ○ नगरों का उदय और धातु मुद्रा का प्रयोग • हरण्यक राजवंश (545-412 ईसा पूर्व) ○ बिंबिसार (544-492 ईसा पूर्व) ○ अजातशत्रु (492-460 ईसा पूर्व) ○ उदयिन (460-444 ईसा पूर्व) • शिशुनाग राजवंश (413 ईसा पूर्व से 345 ईसा पूर्व) ○ शिशुनाग ○ कालाशोक • नंद राजवंश (345-321 ईसा पूर्व) ○ महापद्म नंद ○ धनानंद • महाजनपद के युग के दौरान प्रशासनिक व्यवस्था • कानूनी और सामाजिक व्यवस्था • विदेशी आक्रमण • फारसी आक्रमण	
6.	मौर्य साम्राज्य • भौगोलिक विस्तार • अशोक के शिलालेख • साहित्यिक स्रोत • विदेशी स्रोत • मौर्य राजवंश ○ चंद्रगुप्त मौर्य (321-297 ईसा पूर्व) ○ बिन्दुसार (297-273 ईसा पूर्व)	**56**

	○ अशोक (268-232 ईसा पूर्व) • उत्तर मौर्य: 232 ईसा पूर्व- 185 ईसा पूर्व ○ दशरथ मौर्य ○ संप्रति मौर्य ○ शालिशुका मौर्य ○ देववर्मन मौर्य ○ शतधन्वन मौर्य ○ बृहद्रथ मौर्य • मौर्य प्रशासन ○ केंद्रीय प्रशासन ○ राजनीतिक इकाइयाँ ○ साम्राज्य ○ प्रांतीय सरकार ○ स्थानीय प्रशासन ○ सेना ○ परिवहन ○ न्याय प्रणाली ○ गुप्तचर-व्यवस्था ○ संचार तंत्र ○ मौर्य अर्थव्यवस्था ○ कर संरचना और शासन ○ समाज ○ कला और वास्तुकला	
7.	मौर्योत्तर काल • मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण ○ ब्राह्मणवादी प्रतिक्रिया ○ वित्तीय संकट ○ दमनकारी नियम ○ बाहरी क्षेत्रों का नया ज्ञान ○ उत्तर-पश्चिम सीमांत की उपेक्षा • विदेशी शासक राजवंश ○ इंडो-यूनानी/बैक्ट्रियन यूनानी ○ डेमेट्रियस (बैक्ट्रिया का राजा) ○ हरमाईस • शक / सीथियन ○ मौस (मोगा) ○ क्षहारात (प्राकृत:खरात) • कार्दम वंश	**68**

	• सीथो-पार्थियन/ शक पहलव
	  ○ कुषाण/ यूची/ टोर्चियन
	  ○ मध्य एशियाई घुसपैठ का कालक्रम
	  ○ मध्य एशियाई संपर्कों का प्रभाव
	• स्वदेशी शासक राजवंश
	  ○ शुंग (185-73 ईसा पूर्व)
	  ○ कण्व (72 ईसा पूर्व से 28 ईसा पूर्व)
	  ○ सातवाहन (60 ईसा पूर्व- 225 ईस्वी)
	• भौतिक संस्कृति के पहलू
	• कलिंग का चेती/चेदि वंश (पहली शताब्दी ईसा पूर्व)	

8.	गुप्त युग
	• गुप्त काल के अध्ययन के स्रोत
	• गुप्ता वंश के शासक
	  ○ श्रीगुप्त
	  ○ चन्द्रगुप्त प्रथम-(319-334ई.)
	  ○ समुद्रगुप्त-(335-380ई.)
	  ○ चंद्रगुप्त द्वितीय (380-412 ई.)
	  ○ कुमारगुप्त प्रथम (415-455 ई.)
	  ○ स्कन्दगुप्त (455-467 ई.)
	  ○ विष्णुगुप्त
	• गुप्त प्रशासन
	  ○ साम्राज्य
	  ○ नगर प्रशासन
	  ○ सेना
	  ○ न्यायतंत्र
	  ○ राजस्व और व्यापार
	  ○ खनन और धातुकर्म
	  ○ कृषि
	  ○ सिक्के
	  ○ समाज
	  ○ धार्मिक जीवन
	  ○ गुप्त कला और वास्तुकला
	  ○ विश्वविद्यालय और शिक्षा
	  ○ विज्ञान और तकनीक
	• गुप्त साम्राज्य का पतन
		78

9.	गुप्तोत्तर काल • क्षेत्रीय विन्यास का युग • उत्तर भारत के शासक राजवंश	**87**

	○ मैत्रक ○ मौखरी ○ आभीर(अहीर) राजवंश ○ गौड़ ○ हूण ○ पुष्यभूति राजवंश • दक्षिण भारत और पूर्वी भारत के शासक राजवंश ○ ईक्ष्वाकु ○ चालुक्य ○ बादामी के पश्चिमी चालुक्य ○ कांची के पल्लव ○ त्रिकुट राजवंश ○ कदंब साम्राज्य ○ कालभ्रस	
10.	पूर्व मध्यकालीन भारत (750-1200 AD) • मध्यकालीन युग • भारत में सामंतवाद का प्रभाव • गुर्जर-प्रतिहार (8वीं शताब्दी - 11वीं शताब्दी) • महत्वपूर्ण राजा • प्रशासन • सामाजिक स्थिति • अर्थव्यवस्था • धर्म • कला और वास्तुकला • पतन • बंगाल के पाल शासक (8वीं-12वीं शताब्दी) • महत्वपूर्ण राजा • महत्वपूर्ण पहलू • राष्ट्रकूट (8वीं - 10वीं शताब्दी) • उत्तर में गुर्जर-प्रतिहार, दक्कन में राष्ट्रकूट और पूर्व में पाल वंश के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष • महत्वपूर्ण पहलू • बंगाल के सेन • पश्चिमी गंग • पूर्वी गंग • कर्कोट राजवंश • उत्पल राजवंश • यशस्कर राजवंश • हिंदू शाही राजवंश	**97**
11.	चोल साम्राज्य (850-1200 ईस्वी) • उत्पत्ति • स्रोत • राजनीतिक इतिहास • प्रशासनिक संरचना • कला और वास्तुकला • साहित्य • अर्थव्यवस्था • समाज	**117**

	• धर्म • सेना • कल्याणी के चालुक्य	
12.	दिल्ली सल्तनत • गुलाम/इल्बारी राजवंश (1206-1290 ईस्वी) • खिलजी वंश (1290-1320 ईस्वी) • तुगलक वंश (1320-1413 ईस्वी) • सैय्यद वंश (1414-51ई.) • लोदी राजवंश (1451-1526 ईस्वी) • दिल्ली सल्तनत के तहत प्रशासन, आर्थिक और सामाजिक जीवन • दिल्ली सल्तनत का पतन	**129**
13.	प्रांतीय राजवंश - विजयनगर और बहमनी • विजयनगर साम्राज्य (1336-1672 ई.) • संगम वंश • सलुव वंश (1485-1505 ई.) • नरसिंह राय द्वितीय (1491-1505ई.) • तुलुव वंश (1505-1570 ई.) • अराविदु राजवंश (1570-1650 ई.) • विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन • विजयनगर साम्राज्य के दौरान भारत आने वाले विदेशी यात्री - • विजयनगर साम्राज्य के पतन के कारण • बहमनी सल्तनत (1347-1527 ई.) • विजयनगर और बहमनी राज्यों के बीच संघर्ष का कारण • बहमनी साम्राज्य के पतन का कारण • बहमनी साम्राज्य का विघटन	**144**
14.	मुगल साम्राज्य • विस्तार • बाबर (1526-1530 ई.) • बाबर के युद्ध • हुमायूँ (1530-1540 ई.) • सूर साम्राज्य (1540-1555 ई.) • अकबर (1556-1605 ई.) • जहाँगीर (1605-1627 ई.) • शाहजहाँ (1628-1658 ई.) • औरंगजेब (1658-1707 ई.) • मुगल साम्राज्य का पतन	**158**
15.	मराठा साम्राज्य • मराठों का उदय • मराठा संघ • शाहजी भोंसले • शिवाजी भोंसले (1674-1680ई.) • संभाजी (1681-1689 ई.) • राजाराम (1689-1707ई.) • शाहू (1708-1749ई.) • राजाराम द्वितीय (1749-1777 ई.) • पेशवा (1640-1818ई.) • राजस्व प्रशासन • मराठों के अधीन सैन्य प्रशासन • पिंडारी • मराठों का पतन	**179**

16.	मध्ययुगीन काल में धार्मिक आंदोलन • भक्ति आंदोलन • भक्ति संत • बंगाल में भक्ति आंदोलन • उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन • महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन	**191**

1
CHAPTER

सिन्धु घाटी सभ्यता

भौगोलिक विस्तार

- **क्षेत्रफल-** लगभग **13 लाख वर्ग किमी.** ।
- **विस्तार-** सिंध, बलूचिस्तान, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और उत्तरी महाराष्ट्र।
- **उत्तरतम स्थल-** जम्मू और कश्मीर में मांडा (नदी- चिनाब)।
- **सुदूर दक्षिणी स्थल**- महाराष्ट्र में दैमाबाद (नदी- प्रवर)।
- **पश्चिमी स्थल**- बलूचिस्तान में सुतकागेंडोर (नदी- दशक)।
- **सुदूर पूर्वी स्थल**- उत्तर प्रदेश में आलमगीरपुर (नदी- हिंडन)।

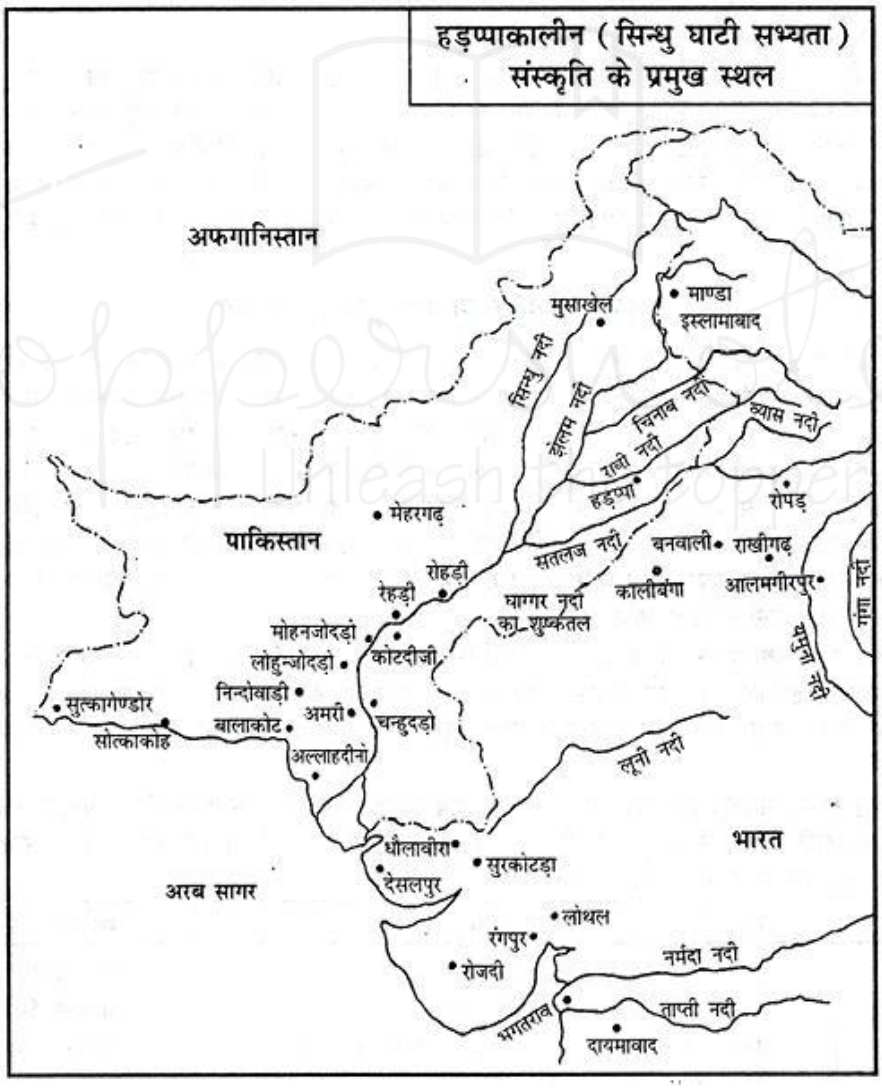

हड़प्पा सभ्यता के चरण

प्रारंभिक/पूर्व-हड़प्पा चरण (3500-2500 ईसा पूर्व)

- घग्गर-हाकरा नदी घाटी के आसपास विकसित।
- एक आद्य-शहरी चरण।
- गाँवों और कस्बों का विकास देखा गया।
- विशेषता- एक केंद्रीकृत प्राधिकरण और शहरी जीवन।
- फसलें - मटर, तिल, खजूर, कपास आदि।
- स्थल- मेहरगढ़, कोट दीजी, धोलावीरा, कालीबंगा आदि।
- सबसे प्राचीन सिंधु लिपि 3000 ईसा पूर्व की है।

परिपक्व हड़प्पा चरण (2500-1800 ईसा पूर्व)

- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और लोथल जैसे बड़े शहरी केन्द्रों का विकास।
- सिंचाई की अवधारणा विकसित हुई।

उत्तर हड़प्पा चरण (1800-1500 ईसा पूर्व)

- क्रमिक पतन के संकेत, 1700 ईसा पूर्व तक अधिकांश शहर खाली हो गए थे।
- स्थल- मांडा, चंडीगढ़, संघोल, दौलतपुर, आलमगीरपुर, हुलास आदि।

हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल

स्थल	नदी	विशेषताएँ
हड़प्पा (1921) पंजाब के मोंटगोमरी जिले में स्थित। "अन्न भंडार का शहर"।	रावी	• 6 अन्न भण्डारों की एक पंक्ति। • यहाँ आर-37 और एच कब्रिस्तान मिले। • ताबूत शवाधान। • लाल बलुआ पत्थर से बनी नर धड़ प्रतिमा। • ताँबे की बैलगाड़ी। • लिंगम और योनि के पाषाण प्रतीक। • देवी माँ की टेराकोटा आकृति। • एक कमरे की बैरक। • कांस्य के बर्तन। • गढ़(उठे हुए भू भाग पर)। • पासा
मोहनजोदड़ो (1922) (मृतकों का टीला) - सिंध के लरकाना जिले में स्थित ।	सिंधु	• विशाल स्नानागार आनुष्ठानिक स्नान के लिए, पत्थर का उपयोग नहीं, जली हुई ईंटों से निर्मित, बाहरी दीवारों और फर्शों पर डामर का प्रयोग। • विशाल अन्न भंडार (मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत)। • बुने हुए कपड़े का टुकड़ा । • नाचती हुई लड़की की कांस्य प्रतिमा- कूल्हे पर दाहिना हाथ और बायाँ हाथ चूड़ियों से ढका हुआ है। • सूती कपड़ा। • देवी माँ की मुहर। • योगी की मूर्ति। • पशुपति मुहर।

		• दाढ़ी वाले मनुष्य की पत्थर की मूर्ति । • मेसोपोटामिया की मुहरें। • नग्न महिला नर्तकी की काँस्य छवि। • शहर की 7 परतें → शहर का 7 बार पुनर्निर्माण किया गया।
लोथल (1957) (बंदरगाह शहर)- गुजरात रत्नों और आभूषणों का व्यापार केंद्र	भोगावो नदी	• 6 वर्गों में बँटा हुआ। • तटीय शहर; मेसोपोटामिया के साथ समुद्री व्यापार संपर्क। • जहाज बनाने का स्थान -गोदीबाड़ा (जहाजों के निर्माण और मरम्मत के लिए) । • चावल की भूसी के साक्ष्य। • दोहरा शावाधन। • अग्नि वेदियाँ। • जहाज का टेराकोटा मॉडल। • माप के लिए हाथी दांत का पैमाना। • फ़ारस खाड़ी की मुहर।
चन्हुदड़ो (1931) - सिंध	सिंधु	• गढ़ के बिना एकमात्र शहर। • मोतियों की फैक्ट्री, लिपस्टिक, स्याही के बर्तन बनाने के साक्ष्य। • ईंट पर कुत्ते के पंजे की छाप। • बैलगाड़ी का टेराकोटा मॉडल। • कांस्य की खिलौना गाड़ी।
कालीबंगा (1953) (काली चूड़ियाँ)- राजस्थान	घग्गर	• अग्नि वेदियाँ • पक्की हुई ईंटों का कोई प्रमाण नहीं , मिट्टी की ईंटों का प्रयोग। • कुओं वाले घर। • जल निकासी व्यवस्था नहीं। • पूर्व-हड़प्पा और हड़प्पा चरण दोनों के प्रमाण दिखते हैं।
धोलावीरा (1990-91) - गुजरात	लूनी	• जल संचयन प्रणाली। • तूफानी जल निकासी व्यवस्था। • स्टेडियम • 10 अक्षरों की नेमप्लेट (सबसे बड़ा IVC शिलालेख)। • 3 भागों में विभाजित होने वाला एकमात्र शहर।
रंगपुर (1931) (गुजरात)	महर	• पूर्व + परिपक्व हड़प्पा चरण के अवशेष। • पत्थर के टुकड़े के साक्ष्य।
बनावली (1973-74) (हिसार, हरियाणा)	सरस्वती	• पूर्व + परिपक्व + उत्तर हड़प्पा चरण। • हल का टेराकोटा मॉडल। • कोई जल निकासी प्रणाली नही। • जौ के दाने। • लापीस लाजुली (राजवर्त)। • त्रिजय सडको वाला एकमात्र स्थल।
राखीगढ़ी (1963) (हरियाणा)		• भारत में सबसे बड़ा आईवीसी स्थल। • एक छिन्न हुई महिला आकृति।
सुरकोटडा (1964) (कच्छ, गुजरात)		• घोड़े के अवशेष और कब्रिस्तान। • भांड शवाधान।

		• अंडाकार कब्र।
अमरी (1929) (सिंध, पाकिस्तान)	सिंधु	• गैंडे के साक्ष्य।
रोपड़ (पंजाब, भारत)	सतलज	• आजादी के बाद खोदा जाने वाला पहला स्थल। • कुत्ते को इंसान के साथ दफनाये जाने के साक्ष्य। • अंडाकार गर्त शवाधान। • ताँम्बे की कुल्हाड़ी।
आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश)	यमुना	• टूटी हुई ताँबे की ब्लेड
दैमाबाद (महाराष्ट्र)	प्रवरा	• कांस्य चित्र (गैंडे, बैल, हाथी और रथ के साथ सारथी) ।

सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएँ

- **नगर नियोजन-**
  - **किलाबंधी**
  - **सुनियोजित सड़कें**।
  - कस्बों में **उन्नत जल निकासी** व्यवस्था।
  - **शहर**- दो या दो से अधिक भाग।
    - **पश्चिमी भाग** - छोटा लेकिन ऊँचा - गढ़- शासक वर्ग के कब्जे में।
    - **पूर्वी भाग-** बड़ा लेकिन निचला- आम या कामकाजी लोगों का निवास -ईंटों से बने घर।
  - **हड़प्पा** और **मोहनजोदड़ो** दोनों में एक **गढ़** था। (इन दो स्थलों को आईवीसी की राजधानी कहा जाता **है**)
  - कस्बों में एक आयताकार ग्रिड पैटर्न या जिसमें **सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थी**।
  - **1 या 2 मंजिला मकान** थे।
  - **मंदिर या महल** जैसी कोई बड़ी स्मारकीय/ ऐतिहासिक- संरचना **नहीं** पायी गयी है ।
  - **निर्माण** के लिए **पक्की**और कच्ची **ईंटों** और **पत्थरों** का **उपयोग।**
  - **मकान कच्ची ईंटों** से बने होते थे, जबकि **जल निकासी प्रणाली पक्की ईंटों से** बनाई जाती थी।
- **विशाल स्नानागार-**
  - गढ़ के टीले में।
  - **ईंटों से बना** एक टैंक जिसका उपयोग स्नान के लिए किया जाता था।
  - टैंक तक जाने के लिए सीढ़ियाँ थी।
  - **माप-** 11.88 मीटर लम्बा 7.01 मीटर चौड़ा और 2.43 मीटर गहरा।
  - **टैंक का निचला भाग जली हुई ईंटों से** बना था।
  - **बगल के कमरे में** एक **बड़े कुएँ** से पानी निकाला जाता था , जिसे **नाले में खाली** कर दिया जाता था।
  - कपड़े बदलने हेतु साइड रूम।
- **धान्यागार-**
  - **मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत**, जो 45.71 मीटर लंबी और 15.23 मीटर चौड़ी।
  - **हड़प्पा**- 15.23 मीटर लंबी और 6.09 मीटर चौड़ी नदी के किनारे स्थित 6 अन्न भंडारों की दो पंक्तियों की उपस्थिति।
  - वृत्ताकार ईंट के चबूतरे की पंक्तियाँ मिली जो **अनाज ताड़ने के लि**ए थी। (वहाँ मिले **गेहूँ और जौ के साक्ष्य** से पता चलता हैं।)
  - **कालीबंगा**- दक्षिणी भाग में, ईंट से बने चबूतरे की उपस्थिति जो शायद अन्न भंडार के लिए उपयोग किए जाते थे।

- **जल निकासी व्यवस्था-**
  - हर घर में अपना **आँगन, निजी कुआँ और हवादार स्नानागार** होता था।
  - इन **घरों का पानी गली की नालियों में जाता था** जो या तो ईंटों या पत्थर की स्लैब से ढके होते थे।
  - हड़प्पा के लोग **स्वास्थ्य और स्वच्छता पर बहुत अधिक ध्यान** देते थे ।
- **कृषि-**
  - सिंधु नदी में वार्षिक बाढ़ के कारण **सिंधु क्षेत्र उपजाऊ** था।
  - जिसके कारण मैदानी इलाकों में समृद्ध **जलोढ़ मिट्टी का जमाव** हुआ (सिंध क्षेत्र की उर्वरता का उल्लेख सिकंदर के इतिहासकार ने चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में भी किया था) ।
  - जली हुई ईंटों से बनी दिवारों की उपस्थिति से प्रमाण मिलता है कि क्षेत्र बाढ़ ग्रस्त था।
  - **बीज नवंबर** में **बोए** जाते थे और **अप्रैल** में फसल काटी जाती थी ।
  - **कटाई** के लिए **पत्थर के दरांती** का **उपयोग।**
  - **नहरों द्वारा सिंचाई** का **अभाव।** हालाँकि, शोरतुग़ई (अफगानिस्तान) में नहरों के साक्ष्य खोजे गए हैं।
  - **पानी जमा करने के लिए अफगानिस्तान** और **बलूचिस्तान** के कुछ हिस्सों में नालियों से घिरे **गबरबंद** या **नालों का निर्माण** किया गया।
  - **कालीबंगा** के पूर्व-हड़प्पा चरण में **जुताई के साक्ष्य** मिले हैं ।
  - **फसलें**- दो प्रकार के गेहूँ और जौ, राई, तिल, खजूर, सरसों और मटर। (बनावली में जौ के साक्ष्य, लोथल में चावल के साक्ष्य)।
  - **धोलावीरा** में **जलाशयों का उपयोग** कृषि के लिए पानी के भंडारण के लिए किया जाता था।
  - दुनिया में **कपास का उत्पादन करने वाले पहले लोग सिंधु** थे। यूनानियों ने इसे सिंधन (सिंध से प्राप्त) कहा।
  - **हल का टेराकोटा मॉडल- बनावली** में खोजा गया।
  - **वस्तु विनिमय** के लिए **अनाज का उपयोग।** किसान अनाज पर कर का भुगतान करते थे और इनका उपयोग मजदूरी के भुगतान के लिए किया जाता था।
  - इस अवधि के दौरान **दोहरी फसल की प्रथा** शुरू हुई।
- **पशुपालन**
  - लोगों ने **पशुचारण** का **अभ्यास** किया।
  - वे **भेड़, मवेशी, बकरी, सूअर और भैंस** जैसे जानवरों को पालते थे।
  - **बिल्लियों** और **कुत्तों** को भी पालतू बनाया गया था।
  - **हाथियों** को भी पाला गया - **गुजरात।**
  - **कूबड़ वाला बैल** - हड़प्पावासियों का पसंदीदा।
  - **ऊँट** और **गधे** - भार ढोने वाले पशु।
  - **खरगोश**, **जंगली पक्षी**, **कबूतर** भी मौजूद थे।
  - **गैंडे के** सा**क्ष्य**- अमरी, लोथल में पाए गए घोड़े का एक टेराकोटा मॉडल और घोड़े के अवशेष सुरकोटडा में पाए गए।
- **व्यापार एवं वाणिज्य**
  - **वस्तु विनिमय प्रणाली** प्रचलित।
  - **पत्थर, धातु, खोल** आदि का **उपयोग करके व्यापार** किया जाता था।
  - **मेसोपोटामिया के साथ व्यापारिक संपर्क** सुमेर, सुसा और उर में पाए गए हड़प्पा मुहरों से स्पष्ट होता है।
  - **लोथल** के **बंदरगाह का उपयोग कपास के निर्यात** के लिए किया जाता था।
  - **निप्पुर** से मिली **मुहर** में **हड़प्पा लिपि** और एक **गैंडे का चित्रण** है।
  - **क्यूनिफॉर्म शिलालेख मेसोपोटामिया** और **हड़प्पावासियों के बीच व्यापारिक संपर्कों का उल्लेख** करता है। इसमें "**मेलुहा**" नाम का उल्लेख है जो **सिंधु क्षेत्र** को और दो व्यापारिक स्टेशनों- दिल्मन और माकन को दरकिनार करते हुए मेसोपोटामिया के साथ इसके व्यापारिक संपर्क को **संदर्भित करता है।**
  - **हड़प्पा की मुहरें फारस की खाड़ी के प्राचीन स्थलों से प्राप्त** हुई हैं।

- **हड़प्पावासियों द्वारा आयात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएँ -** सोना, चाँदी, ताँबा, टिन, लैपिस लाजुली, सीसा, फ़िरोज़ा, जेड, कारेलियन और नीलम।
- हड़प्पा के **बाह्य व्यापार को प्रमाणित करने वाले साक्ष्य-**
  - **मोहनजोदड़ो से बेलनाकार मुहरों की खोज**।
  - **हड़प्पावासियों द्वारा मेसोपोटामिया के सौंदर्य प्रसाधनों का उपयोग**।
  - **हड़प्पा में खोजे गए विदेशी दुनिया में प्रचलित ताबूत शवाधान**।
  - **मेसोपोटामिया की मुहरों पर कूबड़ वाले बैल की आकृति।**

शिल्प उत्पादन

- बर्तन, नाव, मनके, मुहरें, टेराकोटा की वस्तुओं का **निर्माण** किया जाता था।
- **ईंट की चिनाई** की कला जानते थे।
- **धातुओं की रंगाई** और उनके **प्रगलन** की कला **जानते** थे।
- **सीसा, कांस्य, टिन का** बड़े पैमाने पर **उपयोग**

प्रस्तर प्रतिमा -

- **परिष्कृत पत्थर, कांस्य या टेराकोटा की मूर्तियाँ**।
- **हड़प्पा** और **मोहनजोदड़ो** में पाई गई पत्थर की मूर्तियाँ - **त्रि-आयामी खंडों** के लिए उत्कृष्ट उदाहरण ।
- **उदा**. शेलखड़ी से बने दाढ़ी वाले पुजारी और लाल बलुआ पत्थर से बना नर धड़।

कांस्य कास्टिंग

- **'लॉस्ट वैक्स' तकनीक का उपयोग** करके बनाई गई कांस्य मूर्तियाँ।
- इसमें, **मोम की आकृतियों को पहले मिट्टी के लेप से ढक दिया जाता है** और **सूखने दिया** जाता है - **मोम** को **गर्म** किया जाता है और मिट्टी के आवरण में बने **एक छोटे से छेद के माध्यम से बाहर निकाला जाता है**। इस प्रकार बनाया गया **खोखला साँचा** पिघले हुए धातु से भर दिया जाता है । जो वस्तु का मूल आकार लेता है।
- **धातु** के **ठंडा होने के बाद**, **मिट्टी** का आवरण **पूरी तरह से हटा** दिया जाता है।
- **धातु ढलाई** एक **सतत परंपरा** प्रतीत होती है।
- **प्रमुख केंद्र-** दैमाबाद, महाराष्ट्र।

टेराकोटा

- **पत्थर और काँसे की मूर्तियों की तुलना में मानव रूपों के प्रतिनिधित्व अपरिपक्व होता है**।
- **गुजरात** और **कालीबंगा** में अधिक **यथार्थवादी।**
- **सबसे महत्वपूर्ण** - देवी माँ।

मुहर

- लगभग **200 मुहरों की खोज** की गई।
- **ज्यादातर स्टीटाइट से बनी** । कुछ टेराकोटा, सोना, एगेट , चर्ट, हाथी दाँत से बनी।
- अधिकांश मुहरें 2 x 2 आयाम के साथ **चौकोर आकार** की थी।
- **मुख्य** रूप से **व्यावसायिक उद्देश्यों** के लिए उपयोग की जाती थी, हालाँकि इनका उपयोग **ताबीज के रूप में भी** किया जाता था।
- **मुहरें चित्रात्मक** थी जिनमें बाघ, हाथी, बैल, भैंस, गैंडा, बकरी, गौर और अन्य जानवरों के चित्र शामिल थे।
- **मुहरों की लिपि का अर्थ** अब तक **नहीं निकाला गया है**।
- **सबसे महत्वपूर्ण मुहर**- मोहनजोदड़ो से पशुपति महादेव मुहर।
- **लोथल**- **फारस की खाड़ी की मुहरें** मिली हैं।

मनके

- **सोने, चाँदी, ताँबे, कांस्य** और **अर्द्ध कीमती पत्थरों** से बने।

- मुख्य रूप से **बेलनाकार**।
- **लोथल और धोलावीरा**- मनके बनाने की दुकान।

- **धातु, उपकरण और हथियार**
  - **ताँबे-कांस्य के औजार** बनाना जानते थे।
  - उन्होंने **तीर, भाला, सेल्ट और कुल्हाड़ी** जैसे हथियार बनाने **के लिए चकमक पत्थर की** (रोहड़ी चेर्ट से बने), **तांबे** और **हड्डियों**, **हाथी दाँत** के औजारों **का उपयोग** किया।
  - **लोहे का ज्ञान नहीं**।
- **लिपि**
  - **पहली बार 1853 में** खोजी गयी।
  - **पूरी लिपि पहली बार 1923 में** खोजी गई थी, लेकिन यह अभी भी अनसुलझी है।
  - **सबसे बड़े हड़प्पा शिलालेख** में **26 संकेत** हैं और ज्यादातर मुहरों पर दर्ज हैं।
  - **लिपि –** चित्रात्मक।
  - **लेखन की कला से अवगत –** बाएँ से दाएँ लेखन।
- **मृदभाण्ड**
  - **चाक** और **अच्छी तरह से पके हुए मृदभांडों का उपयोग**।
  - कृष्ण लोहित मृदपात्र।
  - **भंडारण जार**, **कटोरे**, **व्यंजन**, **छिद्रित जार**, आदि के रूप में **उपयोग** किया जाता है।
  - पीपल के पत्ते, मछली के शल्क, प्रतिच्छेदन, जिगजैग पैटर्न, क्षैतिज बैंड, पुष्प और जीव ज्यामितीय डिजाइन आदि का उपयोग।
  - **आधार समतल** था।
  - लाल रंग के मृदभाण्डों को काले रंग के डिजाइनों से चित्रित किया गया था।
  - **हड़प्पा -पूर्व चरण में 3 मृदभांड संस्कृतियाँ-**
    - **नाल संस्कृति** (पीले रंग, पीले और नीले रंग के साथ चित्रांकन)।
    - **झोब संस्कृति** (लाल मृदभाण्ड और काले रंग में चित्र)।
    - **क्वेटा** (पीले मृदभाण्ड, काले रंग के द्वारा चित्रांकन)।
- **धर्म**
  - **धर्मनिरपेक्ष समाज**।
  - **देवी माँ की पूजा** की जाती थी - शक्ति या देवी माँ के रूप में पहचाने जाने वाली **अर्द्ध-नग्न टेराकोटा मूर्तियों की खोज** की गई, हड़प्पा में **एक मुहर की खोज** की गई जिसमें **पृथ्वी / देवी माता** को उनके गर्भ से उगने वाले पौधे के साथ दर्शाया गया है।
  - **पशुपति महादेव / प्रोटो शिव की पूजा** की जाती थी- एक त्रिमुखी पुरुष भगवान, योग मुद्रा में बैठे और दाईं ओर गैंडा और भैंस से घिरे हुए **,** बाईं ओर हाथी और बाघ से घिरे हुए उनके पैरों के समीप दो हिरण।
  - **प्रकृति को पूजते थे -** पीपल के पेड़ को सबसे पवित्र माना जाता था।
  - **पूजे जाने वाले जानवर** - कूबड़ वाला बैल, भैंस, बाघ, पक्षी और गैंडा।
  - **पौराणिक पशुओं की पूजा करते थे**।
    - अर्ध-मानव और अर्ध-पशुवर जीव।
  - **मंदिर-पूजा का कोई प्रमाण नहीं**।
  - **जादू, आकर्षण और बलिदान** में **विश्वास**।
    - **बलिदानों को दर्शाने वाली मुहरें**।
    - **कालीबंगा**, **बनावली** और **लोथल** की **अग्निवेदी।**
- **राजनीतिक संगठन**

- इतिहासकारों के अनुसार, **व्यापारियों के एक वर्ग द्वारा शासित**।
- **एक दूसरे से स्वतंत्र शहर**।
- उनके **बीच कोई संघर्ष नहीं**।
- लोगों की **बुनियादी नागरिक सुविधाओं की देखभाल के लिए नगर निगम** जैसा संगठन।

पतन

- **1900 ईसा पूर्व के बाद** पतन शुरू।
- **अन्य स्थलों पर हड़प्पा संस्कृति धीरे-धीरे फीकी** पड़ गई।
- **उत्तर हड़प्पा चरण** /उप-सिंधु संस्कृति- **कृषि**, **पशुपालन** , **शिकार** और **मछली पकड़ने पर निर्भर थी।**
- पश्चिम एशियाई केंद्रों के साथ **व्यापार संपर्कों के अंत** के साक्षी बने।
- **लगभग 1200 ईसा पूर्व**, **पंजाब** और **हरियाणा** के कुछ स्थलों पर, वैदिक संस्कृति से जुड़े **धूसर मृदभांड** और **चित्रित धूसर मृदभांड** पाए गए।
- पतन के बाद पश्चिमी पंजाब और बहावलपुर में **झूकर संस्कृति का विकास** हुआ। इसे **ग्रेवयार्ड-एच संस्कृति भी कहा जाता था**।

सिंधु घाटी सभ्यता का पतन	
इतिहासकार	**पतन के कारण**
गॉर्डन चाइल्ड और स्टुअर्ट पिगट	बाहरी आक्रमण
एच टी लैंब्रिक और एम एस वत्स	अस्थिर नदी प्रणाली
कैनेडी	प्राकृतिक आपदाएँ
स्टीन और घोष	जलवायु परिवर्तन
आर मोर्टिमर व्हीलर और गॉर्डन	आर्यन आक्रमण
रॉबर्ट राइक्स और डेल्स	भूकंप
सूद और डीपी अग्रवाल	नदी का सूखना
फेयरचाइल्ड	पारिस्थितिक असंतुलन
शेरीन रत्नागर	मेसोपोटामिया के साथ व्यापार में गिरावट
एस.आर.राव और मैके	बाढ़

" यह भी उद्धृत किया गया है कि **आग और मलेरिया** जैसे संचारी रोगों का प्रसार भी **सिंधु घाटी सभ्यता** के पतन के कारण थे।"